भारत में गरीबी की अवधारणा

विनोद कुमार*

निर्धनता एक वैश्विक समस्या है। भारत में आज लगभग 68 वर्ष के आयोजन के बाद भी जनसंख्या का करीब एक तिहाई भाग (1/3) गरीबी से ग्रस्त है और भयानक आभावों में जाी रहा है। निर्धनता भारत के अतिरिक्त कुछ अमेरिकी तथा यूरोपीय देशों में भी विद्यामान है। लेकिन उनकी निर्धनता हमारी निर्धनता से अलगत है।

गरीबी अथवा निर्धनता के सम्बन्ध में कहा जाता है कि सामान्यतः वह व्यक्ति गरीब है जो अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकता को भी पूरा नहीं कर पाता। भारत में सबसे बड़ी समस्या गरीबी के मापन को लेकर है। गरीबी की सर्वमान्य परिभाषा अब तक नहीं की जा सकी है। हमारे देश में गरीबी को योजना आयोग ने कैलोरी उपभोग के आधार पर परिभाषित किया है। योजना आयोग द्वारा गठित विशेषज्ञा दल "Task force on Minimum needs and effective consumption Demand" के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिव्यक्ति 2400 कैलोरी तथा शहरी क्षेत्रों में प्रतिव्यक्ति 21 कैलोरी प्राप्त नहीं कर पाता तो ऐसे व्यक्तियों को गरीब माना जाता है। योजना आयोग गरीबों का आंकलन Nation Sample Surevy organization (NSSO) के आकड़ों के आधार पर करता रहा है। बी0एस0 मिन्हास[2] ने गरीबी निर्धारण के लिए इसी परिभाषा को अपनाया है जबकि दांडेकर व रथ तथा एम0एस0 अहलूवालिया ने अपनी–अपनी गरीबी रेखाएं स्वयं निर्धारित की है। दाण्डेकर व रथ के अनुसार 1960–61 मं लगभग 40% ग्रामीण जनसंख्या और 50% शहरी जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे थी।

दूसरी ओर प्रो0टी0डी0 लाकड़ावाला के अध्यक्षता में गठित विशेषज्ञा दल ने योजना आयोग के इन आकड़ों को अविश्वसनीय बताया। प्रो0 लाकड़ावाला ने निर्धनों के आकलन के लिए वैकल्पिक फार्मूल का प्रयोग किया, जिनके आधार पर प्रत्येक राज्य में अलग–अलग निर्धनता रेखाएं निर्धारित की गयीं। लाकड़ावाला फॉर्मूले में शहरी निर्धनता के आकलन हेतु औद्योगिक श्रमिकों के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक व ग्रामीण श्रमिकों के लिए कृषि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक का प्रयोग किया।

भारत में निर्धनता को दो रूपों में मापा जाता है–(1) निरपेख गरीबी के रूप में तथा दूसरा सापेक्ष गरीबी के रूप में। निरपेक्ष गरीबी से तात्पर्य यह है कि कोई व्यक्ति विशेष की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उसकी आय एवं उपभोग कितना कम है। इसका प्रयोग 1945 में किया गया। भारत में वर्तमान समय में गरीबी मापन के लिए इसी अवधारण का प्रयोग किया जाता है।

गरीबी मापने हेतु

निर्धनता मापने की द्वितीय विधि सापेक्ष गरीबी है। सापेक्ष गरीबी का आशय जीवन निर्वाह से नीचे की गरीबी न होकर किसी अन्य व्यक्ति, समूह, राष्ट्र के सापेक्ष हीन अवस्था का परिचायक है। इस प्रकार सापेक्ष गरीबी दो राष्ट्रों के बीच आय के असमानता को प्रदर्शित करती हे।

हमारे देश में गरीबी रेखा का सम्बन्ध कैलोरी की उपायों की मात्रा से जोड़ा गया है। परन्तु गरीबी का सम्बन्ध केवल आय या कैलोरी से जोड़ना उपयुक्त नहीं होगा, बल्कि हमें यह देखना होगा कि लोगों की बीमारियों से कहाँ तक रक्षा हो पा रही है ? उनकी रोटी कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार जैसी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति हो रही है या नहीं?

---

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र, महामाया राजकीय महाविद्यालय, धनूपुर, हण्डिया इलाहाबाद

भारत में गरीबी की वर्तमान स्थितिः–

घरेलू एवं वैश्विक स्तर पर निर्धनता का सही–सही आंकलन हमेशा एक विवादास्पद मुद्दा रहा है। वैश्विक स्तर पर विश्व बैंक निर्धनता रेखा का निर्धारण 1.25 डालर (क्रय शक्ति समता के आधार पर) प्रति व्यक्ति प्रति दिन निर्धारित करता है। योजना आयोग के अनुसार 2004–05 में भारत में 37.2 प्रतिशत आबादी निर्धन थी जो वर्ष 2011–12 में घटकर 21.9% हो गयी। तेन्दुलकर समिति के द्वारा सुझाए गये माप दण्डों के अनुसार वर्ष 2011–12 गाँवों में 816 व शहरों में 1000 रूपये प्रतिमाह से कम उपभोग व्यय करने वाला व्यक्ति निर्धनता रेखा की श्रेणी में आता है।

विश्व बैंक रिपोर्ट (2007–08) के अनुसार दुनियां में कुल गरीबों की संख्या 1260 मिलियन है जिसमें 270 मिलियन अकेले भारत में है। चीन में गरीबी उस की जनसंख्या की अनुपात से 11.8% तथा पाकिस्तान में 17.2% है। UNDP की ह्यूमन रिपोर्ट के अनुसार देश में गरीबों की संख्या 42 करोड़ है जो 26 अफ्रीकी देशों के गरीबों से 1 करोड़ अधिक है।

निर्धनता के आकलन पर सर्वाधिक आलोचनात्मक विवाद योजना आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ0 मोंटेक सिंह अहलूवालिया द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में मार्च, 2011 में दायर एक शपथ पत्र को लेकर हुआ, जिसमें योजना आयोग ने कहा कि शहरी क्षेत्रों में 965 रू0 प्रतिमाह तथा ग्रामीण क्षेत्रों में 781 रू0 प्रतिमाह से अधिक खर्च करने वाले लोग निर्धन नहीं है। आयोग ने यह भी कहा कि ''शहरी क्षेत्रों रु0 32 प्रतिदिन तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रु0 26 प्रतिदिनि खर्च करने वाले लोग निर्धनता रेखा से नीचे रहने वाले लोगों के लिए चलाई गई योजना के अन्तर्गत लाभ पाने के पात्र नहीं हैं।

आर्थिक सर्वेक्षण 2014–15 के अनुसार गरीबी की संख्या को नीचे दिये गये सारणी द्वारा आसानी से समझा जा सकता हैं–

भारत में निर्धनता अनुपात व निर्धनों की संख्या						
निर्धनता अनुपात (प्रतिशत में)			निर्धनों की संख्या (करोड़ में)			
वर्ष	ग्रामीण	शहरी	अखिल भारत	ग्रामीण क्षेत्र	शहरी क्षेत्र	अखिल भारत
1993–94	50.1	31.8	45.3	32.86	7.45	40.37
2004–05	41.8	25.7	37.2	32.63	8.08	40.71
2011–12	25.7	13.7	21.9	21.65	5.28	26.93
2014–15	30.9	26.4	29.5	26.05	10.25	36.30

Source-Economic Survey- 2014-15

सरकार द्वारा चलाये गये मुख्य गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम–

संविधान लागू होने के बाद से ही देशभर में विशेषरूप से ग्रामीण व नगरीय मलिन बस्तियों में बसने वाले वंचितों जैसे कमजोर तपकों के लिए नई–नई कल्याणकारी योजनाओं को संचालित कर उनहें समाज की मुख्य धारा में शामिल किये जाने हेतु विभिन्न प्रयास किये जाते रहे हैं। गरीबी उनमूलन हेतु सरकार द्वारा निम्न कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं–

1. राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) –

निर्धनता निवारण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर इसकी शुरूवात 3 जून, 2011 को राजस्थान से किया गया। इस मिशन के तहत ग्राम स्तर पर स्वयं सहायता समूहों के फेडरेशन के रूप में गठित कर उनके माध्यम से लाभप्रद स्वरोजगार उपलब्ध कराना। यह कार्यक्रम देश में गरीबी रेखा के नीचे जीवन

यापन करने वाले 7 करोड़ परिवार सहित देश के 600 जिलों में संचालित किया जा रहा है। वर्ष 2014–15 में इस मिशन के लिए सरकार द्वारा 3560 करोड़ रू0 आवंटित किये गये हैं।

2. महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम (MNREGA)

निर्धनता उन्मूलन की यह महत्वाकांक्षी योजना है। इस योजना का प्रारम्भ 2 फरवरी, 2006 को आन्ध्रप्रदेश के अनंतपुर जिले से किया। पहले से चले रहे 'काम के बदले अनाज' योजना व 'सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना' का विलय इस योजना में कर दिया गया। 1 अप्रैल, 2008 से इस योजना को सम्पूर्ण देश में लागू कर दिया गया। इस योजना में चयनित जिलों में ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक परिवार के एक सदस्य को वर्ष में 100 दिन रोजगार उपलब्ध कराया जाता है। इसका नामकरण 2 अक्टूबर, 2009 को बदलकर 'मनरेगा' कर दिया गया। कुल सृजित श्रम दिवसों में एस0सी0/एस0टी0 हिस्सेदारी 51 प्रतिशत तथा महिलाओं की हिस्सेदारी 47 प्रतिशत है।

निर्धनता उन्मूलन के लिए सुझावः–

सरकार द्वारा गरीबी उन्मूलन के लिए स्वतंत्रता के बाद से ही अनेक कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। हमारे देश में निश्चित ही निर्धनता में कमी आई है लेकिन उल्लेखनीय है कि निर्धनता प्रतिशत में कमी आई लेकिन निर्धनता संख्या में वृद्धि हुई है। निर्धन्ता उन्मूलन में निम्न तरीके भी निर्धनता निवारण में सहायक हो सकते हैं–

1. देश में चल रहे मनरेगा (MNREGA) जैसे कार्यक्रम को शहरी स्तर तक लाना।
2. मनरेगा में दिये जा रहे हैं 100 अकुशल श्रम दिवसों की संख्या को बढ़ाकर कम से कम 200 श्रम दिवस करना। इससे हमारे गरीबी की न्यूनतम आय वैश्विक गरीबी रेखा 1.25 डालकर के करीब पहुँच जायेगी।
3. हमारे देश में लगभग 36 करोड़ जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है, अतः इनके लिए प्रत्येक वर्ष अलग से बजट लाने की जरूरत है।
4. गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों के लिए जिले स्तर पर अलग से बैंक खोलने की जरूरत है, जिसके बचत खाते का ब्याज कम से कम 6 प्रतिशत हो।
5. जिस प्रकार देश में गरीबी रेखा को निर्धारित किया जाता है उसी प्रकार देश में अमीरी रेखा को भी निर्धारित किये जाने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

नियोजन प्रक्रिया के लागू होने के लगभग छः दशकों के बाद भी देश की लगभग एक तिहाई जनसंख्या का निर्धन होना निश्चित ही खेद का विषय है। नियोजन प्रक्रिया के बाद विशेष रूप से 1991के आर्थिक सुधारों के बाद यह समझा गया कि देश में रोजगार के नवीन अवसर उत्पन्न होंगे तथा इससे गरीबी कम होगी। परन्तु देखा गया कि नर्धन और निर्धन हुए और धन का संकेन्द्रण कुछ हाथों में होने लगा। देश में आर्थिक असमानता में भारी वृद्धि हुई है।,

निर्धनता के निर्धारण हेतु देश में गठित चाहे कोई भी समिति क्यों न हो उसका आकलन वास्तविक स्थिति मसे मेल नहीं खाता। इस संदर्भ में प्रो0 अमर्त्य सेन का यह कथन महत्वपूर्ण है कि गरीबी कोई एक आर्थिक वर्ग ही नहीं है, गरीबी बहुत सी आर्थिक परिस्थितियों का परिणाम है। अमर्त्य सेन ने गरीबी विश्लेषण के लिए दो चरणों को आवश्यक बताया, प्रथम–प्रति व्यक्ति आय के आधार पर, द्वितीय–व्यक्ति की वास्तव में खराब स्थिति के आधार पर। अन्त में हम कह सकते हैं कि देश में निर्धनता उन्मूलन हेतु सरकार को विशेष ध्यान देना चाहिए। नहीं तो हम भविष्य में सिर्फ आकड़ों का खेल खेलते रह जायेंगें

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मिश्रा एवं पूरी, भारतीय अर्थव्यवस्था 2003, पृष्ठ–173
2. योजना आयोग, छठा पंचवर्षीय योजना
3. बी0एस0 मिन्हास, "Land Redistribution and Development" भारत आर्थिक समीक्षा, अप्रैल 1970
4. दाण्डेकर एवं रथ, Poverty in India (Bombay, 1970)
5. लाल एस0एन0 भारतीय अर्थव्यवस्था एवं सांख्यिकीय सर्वेक्षण।
6. कुरूक्षेत्र (2010) ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली।
7. योजना (2010) सूचना प्रकाशन मंत्रालय, नई दिल्ली।
8. आर्थिक शोध पत्रिका, महत्मा गाँधी काशी विद्यापठी, वाराणसी, डा0 मेवालाल पृष्ठ–209
9. प्रतियोगिता दर्पण अर्थव्यवस्था अतिरक्तांक, 2015
10. मूल विचार।